संपादक की कलम से..................

रामअवतार बैरवा

ये सदी कविता खोज रही है

वो समय हमें ही नहीं, हमारे दौर के सभी साहित्यविदों की स्मृति में होगा, जब अधिकांश पत्र-पत्रिकाएं साहित्य, कला और संस्कृति को समर्पित थीं। ये समर्पण आज भी है पर इसका रूप पूरी तरह बदल चुका है। साहित्य छप रहा है पर अपनों का या फिर सम्पादक खुद लेखक से अनुरोध करके मंगवा रहा है। संस्कृति का अर्थ अगर फैशन, भोजन बनाने की विधि, घर सजाने के तरीके, डेटिंग संचेतना और विवाहोत्तर संबंध में सावधानी है तो ये सब उनमें भरपूर है और कला का अर्थ सिर्फ़ फिल्में और धारावाहिकों से संबंधित खबरें हैं तो ये सब भी इनमें खूब मिल जाता है। आज 80 प्रतिशत पत्र-पत्रिकाओं के बंद हो जाने की बुनियाद में ये ही है । सम्पादक नाम का पद अब लगभग खत्म हो गया है। अपने प्रयासों से निकल रही पत्र-पत्रिकाएं इस बहस से बाहर इसलिए की जा सकती हैं कि पत्र-पत्रिकाएं निकाल लेना ही उनकी बहुत बड़ी सेवा है।

बीसवीं सदी के शुरुआती चार-पांच साल तक भी सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था । सोशल मीडिया ने कैंसर बनकर हमारे सारे दर्शन और विचारों को लगभग लील लिया । पत्र-पत्रिकाएं व्यक्तित्व के आदान-प्रदान का माध्यम हुआ करती थीं। इसमें छपे शब्द संवेदना और भावनाओं का भरा-पूरा समंदर हुआ करते थे । इनसे हर आवश्यकता की जरूरत भी पूरी हो जाया करती थी । साहित्यिक पृष्ठ पर एक बार आंखें गढ़ जाने के बाद वह गमों की मीठी यादों में भीगकर ही निकलती थी। मन संवेदनाओं के आकाश से होते हुए प्रेम, दया, करुणा की राहों में आकर ठहर जाता था। छोटी-छोटी कविताओं पर साहित्यिक गलियारों में बड़ी-बड़ी चर्चाएं हुआ करती थी।

राजधानी, दिल्ली में तो एक जमाने में काफी हाउस में सभी लेखक एक साथ बैठकर साहित्यिक रचनाओं पर चर्चा करते थे । आपसी दु:ख-दर्द भी सांझा कर लिया करते थे। निस्संदेह यह सब आज उस समय से अधिक हो रहा है पर इसमें वो आत्मीयता और भाव नहीं है। हर रोज सुबह-सुबह वाट्सएप पर नमस्ते करने वाले सामने दिख जाएं तो वो ही बचके निकल जाते हैं। एक कविता पर दो सौ से, दो हजार तक लाइक या कमेंट आ जाते हैं। कुछेक उनके अपने उसे शेयर भी कर देते हैं। अगर हम पिछले बीस साल का साहित्य पढ़ें या देखें तो अन्य विधाओं को एक बार छोड़ भी दिया जाए और सिर्फ कविताओं की बात की जाए तो हजारों कवियों में दस कविता भी ऐसी नहीं होंगी, जो साहित्य की निधि बन सकें । कारण असंख्य हैं पर भी रचनाकार यह नहीं चाहते कि लिखने से बेहतर है, पढ़ा जाए । दूसरा बहुत जल्द, बहुत अधिक पा लेने की चाह मन से नहीं जाती । वो यह भी नहीं जानते कि आप जितने बड़े कवि बनते जाओगे, उतने आपके रकीब बनते चलें जाएंगे। उन्हें आपकी हर कविता में खोट नज़र आएंगी । वह दौर अच्छाई को उजागर करने वाला था , यह बिल्कुल विपरीत है । अगर आपने कोई बेहतर रचना लिखी भी दी तो उसमें एक-आध नये पंख जोड़कर पल भर में उसे उड़ा ले जाएंगे। इसलिए लिखने के बाद उसे कुछेक साल कहीं छिपाकर रखना भी जरूरी है। एक और अंतिम और महत्वपूर्ण बात कि कविता कभी भी आपको दौलत नहीं देती, मुहब्बत देती है। मुहब्बत हर युग में कविता पर भारी रही है। कबीर, ग़ालिब, निराला इसके प्रमाण हैं। कविता जितनी बूढ़ी होता है, उतनी समृद्ध होती जाती है। सौ कविताएं पढ़कर एक कविता लिखी जाए न कि एक पढ़कर सौ । हाथ आपके होते हैं पर कलम ईश्वर पकड़कर रखता है। उसके पास अरबों काम होते हैं। समय का इंतजार करें । सच्चे मन से से कविताएं लिखी जाएंगी तो आपकी हर बात भी कविता होगी।